

9. अधजल गगरी छलकत जाय—

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) प्रदर्शन करना।  
 (b) ओछा व्यक्ति प्रदर्शन अधिक करता है।  
 (c) वकवादी होना।  
 (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(b) ओछा व्यक्ति प्रदर्शन अधिक करता है।

**YUKTI ज्ञान**—अधजल गगरी छलकत जाय = ओछा व्यक्ति प्रदर्शन अधिक करता है।

**प्रयोग**—मोहन विद्वान है परन्तु वह तभी अपनी राय देता है जब कोई माँगता है जबकि श्याम हर जगह बोलकर अपनी विद्वता प्रदर्शित करता है, भले ही गलत जानकारी दे रहा हो। इसे देखकर कोई कहने लगा कि इस पर तो वही कहावत चरितार्थ होती है कि अधजल गगरी छलकत जाये।

10. इमली के पात पै बरात का डेरा—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) स्वयं अनुभव करना (b) स्थान थोड़ा पर भीड़ अधिक  
 (c) काम न करना (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) स्थान थोड़ा पर भीड़ अधिक

**YUKTI ज्ञान**—इमली के पात पै बरात का डेरा = स्थान छोटा पर भीड़ अधिक।

**प्रयोग**—आपने सेमीनार के लिए 100 कुर्सियों वाला हॉल बुक करवाया वही मिसाल लागू कर दी कि इमली के पात पर बरात का डेरा।

11. 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' का अर्थ है—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) काम न जानना और बहाना बनाना।  
 (b) नाच न जानना।  
 (c) तत्परता से काम न करना।  
 (d) काम बिगाड़ना।

उत्तर—(a) काम न जानना और बहाना बनाना।

**YUKTI ज्ञान**—नाच न जाने आँगन टेढ़ा = काम न जानना परन्तु बहाने बनाना।

**प्रयोग**—राधा से गाना तो आता नहीं पर गला खराब होने की बात कहने पर लोग कहने लगे कि नाच न जाने आँगन टेढ़ा वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

12. 'आ बैल मुझे मार' का अर्थ बताइए—

- (a) जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।  
 (b) कायर होते हुए बल प्रदर्शन करना।  
 (c) छेड़छाड़ करना।  
 (d) बलशाली के सामने वीरता दिखाना।

उत्तर—(a) जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।

**YUKTI ज्ञान**—आ बैल मुझे मार = जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।

**प्रयोग**—जस दुष्ट से दूर रहने में ही भलाई है पर तुम हो कि उससे बारबार उलझकर आ बैल मुझे मार की कहावत चरितार्थ कर रहे हो।

13. 'थाली का बैंगन होना' का अर्थ है—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) थाली के बीच बैंगन होना (b) सिद्धान्तहीन होना  
 (c) उछलकूद करना (d) बैंगनी रंग का होना

उत्तर—(b) सिद्धान्तहीन होना।

**YUKTI ज्ञान**—थाली का बैंगन होना = सिद्धान्तहीन होना।

**प्रयोग**—नेताजी की बात मत करो। वे तो टिकट पाने के लिए किसी भी पार्टी में जा सकते हैं क्योंकि वे तो थाली के बैंगन हैं।

14. लोहे के चने चबाना—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) आसानी से काम होना। (b) लोहे से बना चना खाना।  
 (c) कठिन परिश्रम करना। (d) चने पर लोहे का पानी चढ़ाना।

उत्तर—(c) कठिन परिश्रम करना।

**YUKTI ज्ञान**—लोहे के चने चबाना = कठिन परिश्रम करना।

**प्रयोग**—अध्यापक बनाना सरल नहीं है। इसके लिए बच्चू लोहे के चने चबाने पड़ते हैं।

15. 'एक पंथ दो काज' का अर्थ है—

- (a) बहुत से लाभ उठाना। (b) अत्यन्त लोभी होना।  
 (c) अलग मार्ग पर चलना।  
 (d) एक उपाय से दो कार्य सम्पन्न करना।

उत्तर—(d) एक उपाय से दो कार्य सम्पन्न करना।

**YUKTI ज्ञान**—एक पंथ दो काज = उपाय से दो कार्य सम्पन्न करना।

**प्रयोग**—इलाहाबाद में हाईकोर्ट में मुकदमे की तारीख भी कर आया और संगम स्नान भी इस प्रकार एक पंथ दो काज हो गए।

16. तलवे चाटना—

- (a) खुशामद करना। (b) प्रशंसा करना।  
 (c) लालची होना। (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) खुशामद करना।

**YUKTI ज्ञान**—तलवे चाटना = खुशामद करना।

**प्रयोग**—जिसने अपने मन को वश में कर लिया है और जो लोभ-लालच से दूर है उसे किसी के तलवे चाटने की क्या जरूरत है?

17. तीन तेरह होना—

- (a) नष्ट होना। (b) बिखर जाना।  
 (c) मुसीबत पड़ना। (d) कहीं का न रहना।

उत्तर—(b) बिखर जाना।

**YUKTI ज्ञान**—तीन तेरह होना = बिखर जाना।

**प्रयोग**—पिता के मरते ही उसका सारा परिवार मुकदमेबाजी में फँसकर तीन-तेरह हो गया।

18. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली—

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) बहुत अन्तर होना। (b) दिखावा करना।  
 (c) जबर्दस्ती गले पड़ना। (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) बहुत अन्तर होना।

**YUKTI ज्ञान**—कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली = बहुत अन्तर होना।

**प्रयोग**—भाई मैं सेठ बालकिशन की बराबरी नहीं कर सकता। उनकी मेरी आमदनी में कोई तुलना नहीं क्योंकि कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली।

19. छाती पर मूँग दलना—

- (a) परेशानी उठाना। (b) बुरा मानना।  
 (c) साथ में रहकर तंग करना। (d) कुछ भी न करना।

उत्तर—(c) साथ में रहकर तंग करना

**YUKTI ज्ञान**—छाती पर मूँग दलना = पास रहकर परेशान करना।

**प्रयोग**—झगड़ालू बहू ने सास से कहा — मैं कहीं जाने वाली नहीं यहीं रहकर आपकी छाती पर मूँग दलूँगी।

20. कुएँ में बाँस डालना—

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) बहुत खोजबीन करना। (b) परिश्रमी होना।  
(c) कठिन होना। (d) लालच करना।

उत्तर—(a) बहुत खोजबीन करना।

**YUKTI ज्ञान**—कुएँ में बाँस डालना = बहुत खोजबीन करना

**प्रयोग**—पुलिस ने हत्या का सुराग लगाने के लिए कुएँ में बाँस डाले पर शव प्राप्त न हो सका।

## अध्याय 8. काव्यशास्त्र

### 8.1 रस

काव्य को पढ़ने से जो आनन्द प्राप्त होता है उसे 'रस' कहते हैं।

इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक भरत मुनि हैं, जिन्होंने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में रस सूत्र दिया है—विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगात् रस निष्पत्तिः। अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव का (स्थायी भाव से) संयोग होने पर रस की निष्पत्ति होती है।

यद्यपि इस सूत्र में कहीं पर भी स्थायी भाव का उल्लेख नहीं है तथापि विभाव से स्थायी भाव जाग्रत होता है, अनुभाव से प्रतीत योग्य बनता है और व्यभिचारी भाव उसे पुष्ट करते हैं। इस प्रकार इन तीनों का स्थायी भाव से संयोग होने पर रस की निष्पत्ति होती है।

इस सूत्र में संयोग, निष्पत्ति शब्द अस्पष्ट हैं। इसकी व्याख्या बाद में चार आचार्यों ने की जिन्हें रस सूत्र के व्याख्याता आचार्य कहा जाता है। भरतमुनि ने नाटक के तीन तत्व—वस्तु, नेता, रस बताए हैं, उन्होंने नाटक में इस पर विचार किया है। वे रसों की संख्या आठ मानते हैं, उनके अनुसार निर्वेद स्थायी भाव का अभिनय नहीं हो सकता अतः शान्त रस की निष्पत्ति नहीं हो सकती।

♦ इस सूत्र के व्याख्याता आचार्यों और उनके मत के नाम इस प्रकार हैं—

#### रस सूत्र के व्याख्याता आचार्य

व्याख्याता आचार्य का नाम	संयोग का अर्थ	निष्पत्ति का अर्थ	मत का नाम	विशेष
1. भट्ट लोल्लट	उत्पाद्य-उत्पादक सम्बन्ध	उत्पत्ति	उत्पत्तिवाद, आरोपवाद	रस सूत्र के पहले व्याख्या आचार्य।
2. आचार्य शंकुक	अनुमाप्य-अनुमापक सम्बन्ध	अनुमिति	अनुमितिवाद	चित्र-तुरंग न्याय के आविष्कारक।
3. भट्टनायक	योज्य-योजक सम्बन्ध	भुक्ति	भुक्तिवाद	साधारणीकरण सिद्धान्त के प्रणेता।
4. अभिनवगुप्त	व्यंग्य-व्यंजक सम्बन्ध	अभिव्यक्ति	अभिव्यक्तिवाद	रस ध्वनि को काव्यात्मा मानते हैं।

#### रस के अवयव

रस के चार अवयव हैं—

- (1) **विभाव**—आश्रय के हृदय में स्थायी भाव उद्बुद्ध करने के कारणों को विभाव कहते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं—आलम्बन विभाव, उद्दीपन विभाव।
- (2) **अनुभाव**—अनुभावो भाव बोधकः, अर्थात् भाव के बोधक कारण अनुभाव कहे जाते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं—वाचिक, कायिक, सात्विक, आहार्य।
- (3) **व्यभिचारी भाव**—इन्हें संचारी भाव भी कहते हैं। ये सभी रसों में संचरण करते हैं। इनकी संख्या 33 बताई गयी है।
- (4) **स्थायी भाव**—जो सहृदय में स्थायी रूप से रहते हैं और अनुकूल कारण पाना उद्बुद्ध (जाग्रत) हो जाते हैं। स्थायी भावों की संख्या 9 बताई गयी है।

#### सात्विक अनुभाव

ये आठ प्रकार के होते हैं—

- |               |               |
|---------------|---------------|
| (1) अश्रु,    | (2) स्वेद,    |
| (3) रोमांच,   | (4) कम्प,     |
| (5) स्वर भंग, | (6) वैवर्ण्य, |
| (7) स्तम्भ,   | (8) प्रलय।    |

#### संचारी भाव

ये 33 होते हैं—इन्हें व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है। इनके नाम हैं—

- |                |                |
|----------------|----------------|
| (1) निर्वेद,   | (17) अपस्मार,  |
| (2) शंका,      | (18) विबोध,    |
| (3) मद,        | (19) अवहित्था, |
| (4) आलस्य,     | (20) यति,      |
| (5) दैन्य,     | (21) उन्माद,   |
| (6) मोह,       | (22) ज्ञान,    |
| (7) ग्लानि,    | (23) हर्ष,     |
| (8) असूया,     | (24) जड़ता,    |
| (9) श्रम,      | (25) विषाद,    |
| (10) ब्रीड़ा,  | (26) निद्रा,   |
| (11) चिन्ता,   | (27) स्वप्न,   |
| (12) धृति,     | (28) अवमर्ष,   |
| (13) चपलता,    | (29) उग्रता,   |
| (14) आवेग,     | (30) व्याधि,   |
| (15) गर्व,     | (31) मरण,      |
| (16) औत्सुक्य, | (32) त्रास,    |
|                | (33) वितर्क।   |

## रसों की संख्या

रसों की संख्या 9 मानी गयी है। भरत मुनि के अनुसार, नाटक में केवल 8 रस ही सम्भव हैं। शान्त रस के स्थायी भाव 'निर्वेद' का अभिनय सम्भव नहीं है, अतः नाटक में शान्त रस नहीं हो सकता, ऐसा उनका मत है। रति भाव तीन प्रकार का होता है—दाम्पत्य रति, वात्सल्य रति, ईश्वर विषयक रति। अतः रति भाव से शृंगार रस के साथ-साथ वात्सल्य रस, भक्ति रस भी निष्पन्न हो सकता है, तब रसों की कुल संख्या 11 हो जायेगी। किन्तु मूलतः नव रस ही माने गये हैं। इन रसों के स्थायी भाव इस प्रकार हैं—

रस	स्थायी भाव
1. शृंगार	रति
2. हास्य	हास
3. करुण	शोक
4. वीर	उत्साह
5. अद्भुत	विस्मय
6. शान्त	निर्वेद
7. भयानक	भय
8. वीभत्स	जुगुप्सा
9. रौद्र	क्रोध

**YUKTI ज्ञान**—वात्सल्य रस का स्थायी भाव संतान विषयक रति और भक्ति रस का स्थायी भाव भगवद् विषयक रति है, किन्तु इन्हें शृंगार में ही अन्तर्भूत कर लिया गया है अतः रसों की मूल संख्या 9 ही है। शृंगार को 'रसराज' माना गया है।

## रस का उदाहरण

राधा को देखकर कृष्ण के मन में रति भाव जाग्रत हुआ, जो यमुना का एकांत किनारा, उपवन, चाँदनी के कारण उद्दीप्त हो गया। कृष्ण मंद-मंद मुस्कराने लगे और राधा से प्रेमालाप करने लगे। हर्ष, आवेग आदि संचारी भाव इसे पुष्ट कर रहे हैं। इन सबसे मिलकर शृंगार रस की निष्पत्ति हो रही है। इस उदाहरण में

- राधा आलम्बन विभाव
- कृष्ण आश्रय
- स्थायी भाव रति
- उद्दीपन विभाव यमुना का एकांत किनारा, उपवन।
- अनुभाव कृष्ण का मन्द-मन्द मुस्कराना, राधा से प्रेमालाप।
- संचारी हर्ष, आवेग
- रस शृंगार रस की सभी सामग्री उपलब्ध होने से यहाँ उत्पन्न रति भाव शृंगार रस की निष्पत्ति कर रहा है।

## 8.2 काव्य सम्प्रदाय

काव्य सम्प्रदाय	प्रवर्तक	ग्रन्थ का नाम
1. रस सम्प्रदाय	भरत मुनि	नाट्यशास्त्र
2. अलंकार सम्प्रदाय	भामह	काव्यालंकार
3. रीति (गुण) सम्प्रदाय	वामन	काव्यालंकार सूत्रवृत्ति
4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय	कुन्तक	वक्रोक्ति जीवित
5. ध्वनि सम्प्रदाय	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक
6. औचित्य सम्प्रदाय	क्षेमेन्द्र	औचित्य विचार चर्चा

## काव्य हेतु—

1. प्रतिभा, 2. अभ्यास, 3. व्युत्पत्ति।

**काव्य प्रयोजन**—मम्मट ने छः काव्य प्रयोजन बताये हैं—

1. यश प्राप्ति, 2. धन प्राप्ति, 3. व्यवहार ज्ञान, 4. शिवेतर क्षतये,
5. आत्म-शान्ति, 6. कान्ता सम्मित उपदेश।

**काव्य लक्षण**—काव्य की निम्न परिभाषाएँ आचार्यों ने दी हैं—

1. तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। —मम्मट
2. शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। —भामह
3. शरीरं तावदिष्टार्थं व्यवच्छिन्ना पदावली। —दण्डी
4. वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। —विश्वनाथ
5. रमणीयार्थं प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। —पण्डितराज जगन्नाथ

**साधारणीकरण**—के सम्बन्ध में विभिन्न आचार्यों के निम्न मत हैं—

1. भट्टनायक भावकत्वं साधारणीकरणं तेन हि व्यापारेण विभावादयः स्थायी च साधारणी क्रियन्ते।
2. विश्वनाथ परस्य न परस्येति ममेति न ममेति च।
3. रामचंद्र शुक्ल साधारणीकरण आलम्बनत्व धर्म का होता है।
4. डॉ. नगेन्द्र साधारणीकरण कवि की अनुभूति का होता है।
5. श्यामसुन्दरदास साधारणीकरण सहृदय के चित्त का होता है।

## शब्द शक्तियाँ—

शब्द शक्ति	अर्थ	शब्द	विशेष
1. अभिधा	अभिधेयार्थ	वाचक	अभिधेयार्थ का बोध कराती है।
2. लक्षणा	लक्ष्यार्थ	लक्षक	लक्ष्यार्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति है।
3. व्यंजना	व्यंग्यार्थ	व्यंग्य	व्यंजन शब्द शक्ति व्यंग्यार्थ का बोध कराती है।

## लक्षणा के भेद—

1. रूढ़ा लक्षणा, प्रयोजनवती लक्षणा
2. सारोपा, साध्यवसाना लक्षणा
3. गौणी, शुद्धा लक्षणा
4. अभिधामूला, लक्षणामूला, व्यंजनामूला लक्षणा

## काव्य के भेद—

काव्य के तीन भेद हैं—

(1) ध्वनि काव्य (2) गुणीभूत काव्य (3) चित्र काव्य

- (1) ध्वनि काव्य में व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ से सुंदर होता है।
  - (2) गुणीभूत काव्य में वाच्यार्थ व्यंग्यार्थ से अधिक बेहतर होता है।
  - (3) चित्र काव्य में केवल वाच्यार्थ होता है, व्यंग्यार्थ का पूर्ण अभाव होता है। आनंदवर्द्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा माना है। वस्तुतः वह रस जो ध्वनि से व्यक्त होता है अभिनवगुप्त के अनुसार (रसध्वनि) काव्य की आत्मा है।
- व्यंजना के तीन भेद हैं—** अभिधामूला व्यंजना, लक्षणामूला व्यंजना, व्यंजना मूला व्यंजना।

**काव्य दोष**—रस के अपकर्षक दोष कहे जाते हैं (विश्वनाथ)। काव्य दोष तीन प्रकार के होते हैं—शब्द दोष, अर्थ दोष, रस दोष। प्रमुख काव्य दोषों के नाम हैं—

1. श्रुति कटुत्व दोष सुनने में जो अप्रिय लगे।
2. च्युत संस्कृति दोष जहाँ व्याकरण के प्रतिकूल शब्द का प्रयोग हो।
3. अप्रतीतत्व दोष व्यवहार में न आने वाले शब्दों का प्रयोग।
4. ग्राम्यत्व दोष ग्राम्य शब्दों का प्रयोग।
5. अश्लीलत्व दोष अश्लील शब्दों का प्रयोग।
6. क्लिष्टत्व दोष क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग।
7. न्यून पदत्व दोष जहाँ पद की कमी हो।
8. अधिक पदत्व दोष जहाँ पद की अधिकता हो।
9. दुष्क्रमत्व दोष लोक या शास्त्र विरुद्ध शब्द का प्रयोग।
10. पुनरुक्ति दोष जहाँ शब्द की पुनरुक्ति हो।
11. अक्रमत्व दोष अनुचित स्थान पर शब्द प्रयोग।
12. रस दोष जहाँ भाव व्यंग्य रूप में न होकर स्वयं ही वर्णन करे।

### 8.3 पाश्चात्य काव्यशास्त्र

प्रमुख सिद्धान्त	
सिद्धान्त	प्रतिपादक
1. अनुकरण सिद्धान्त	प्लेटो, अरस्तू
2. विरेचन सिद्धान्त	अरस्तू
3. अस्तित्ववाद	सारन कीकेगार्ड
4. मनोविश्लेषणवाद	फ्रायड
5. मार्क्सवाद	कार्ल मार्क्स
6. अभिव्यञ्जनावाद	क्रोचे
7. काव्य भाषा सिद्धान्त	वर्ड्सवर्थ
8. कल्पना और फैंटेसी सिद्धान्त	कालरिज
9. मूल्य सिद्धान्त	आई. ए. रिचर्ड्स
10. सम्प्रेषण सिद्धान्त	आई. ए. रिचर्ड्स
11. निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त	टी. एस. ईलियट
12. वस्तुनिष्ठ समीकरण का सिद्धान्त	टी. एस. ईलियट
13. परम्परा की अवधारणा सिद्धान्त	टी. एस. ईलियट
14. रूसी रूपवाद	वोरिस एकेनवाम
15. संरचनावाद	सेस्यूर, स्ट्रास
16. विखण्डनवाद एवं उत्तर संरचनावाद	जाक देरिदा
17. आधुनिकतावाद	वर्जीनिया बुल्फ, बर्नार्ड शा, रिचर्ड्स
18. औदात्य सिद्धान्त	लांजाइनस

### पाश्चात्य समीक्षकों की प्रमुख कृतियाँ

1. प्लेटो (427 ई. पू.-347 ई. पू.) द रिपब्लिक, द स्टेट्स मैन, द लाज
2. अरस्तू (374 ई. पू.-322 ई. पू.) पोयटिक्स, रिहैटोरिक्स
3. लांजाइनस (तीसरी शती) ऑन-द-सबलाइम (औदात्य का विचार)
4. क्रोचे (1866-1952 ई.) एस्थेटिक्स (सौन्दर्यशास्त्र)
5. आई. ए. रिचर्ड्स (1893-1979 ई.) प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म
6. वर्ड्सवर्थ (1770-1850 ई.) प्रिफेस टू लिरिकल बैलेड्स (1800 ई.), बायोग्राफिया लिटरेरिया (1817 ई.)
7. कालरिज (1722-1834 ई.) लेक्चर्स ऑन शेक्सपीयर
8. टी. एस. ईलियट (1885-1965 ई.) द सेकरेड वर्ड, सलेक्टेड एसेज, पोयट्री एण्ड ड्रामा, ऑन पोयट्री एण्ड पोयट ऑफ ग्रामाटोलॉजी
9. जाक देरिदा

### विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. इनमें से काव्य हेतु नहीं है—  
(a) प्रतिभा (b) वक्रोक्ति  
(c) अभ्यास (d) व्युत्पत्ति  
उत्तर—(b) वक्रोक्ति

**YUKTI** ज्ञान—काव्य के तीन हेतु हैं—प्रतिभा, अभ्यास, व्युत्पत्ति। अतः वक्रोक्ति को काव्य का हेतु नहीं माना जाता। वक्रोक्ति एक काव्य सम्प्रदाय है।

2. कवि की अनुभूति का साधारणीकरण मानते हैं—  
(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) डॉ. नगेन्द्र  
(c) श्यामसुन्दरदास (d) इनमें से कोई नहीं  
उत्तर—(b) डॉ. नगेन्द्र

**YUKTI** ज्ञान—डॉ. नगेन्द्र कवि की अनुभूति का साधारणीकरण मानते हैं। भट्टनायक भावकत्व व्यापार को साधारणीकरण कहते हैं, रामचंद्र शुक्ल आलम्बन धर्म का साधारणीकरण मानते हैं जबकि श्यामसुन्दरदास कवि के चित्त का साधारणीकरण मानते हैं।

3. 'अभिव्यक्तिवाद' इनमें से किसका मत है ?  
(a) भट्टनायक (b) अभिनवगुप्त  
(c) भट्टलोल्लट (d) आचार्य शंकुक  
उत्तर—(b) अभिनवगुप्त

**YUKTI** ज्ञान—अभिनवगुप्त काव्य सूत्र के चौथे व्याख्याता आचार्य हैं उनका मत अभिव्यक्तिवाद कहलाता है भट्टलोल्लट का मत उत्पत्तिवाद, आचार्य शंकुक का मत अनुमितिवाद कहा जाता है।

4. 'साधारणीकरण सिद्धान्त' के आविष्कारक माने जाते हैं—

- (a) भरतमुनि (b) आचार्य शंकु  
(c) भट्टनायक (d) मम्मट  
उत्तर—(c) भट्टनायक

**YUKTI ज्ञान**—साधारणीकरण सिद्धान्त के आविष्कारक रस सूत्र के तीसरे व्याख्याता आचार्य भट्टनायक माने जाते हैं।

5. इनमें से काव्य प्रयोजन कौन सा है?

- (a) प्रतिभा (b) यश-प्राप्ति  
(c) अभ्यास (d) व्युत्पत्ति  
उत्तर—(b) यश-प्राप्ति

**YUKTI ज्ञान**—मम्मट ने जो छः काव्य प्रयोजन बताए हैं उनमें यशप्राप्ति है शेष तीनों काव्य हेतु हैं, काव्य प्रयोजन नहीं।

6. मम्मट ने किसे काव्य का अनिवार्य तत्व माना है?

- (a) अलंकार को (b) ध्वनि को  
(c) रस को (d) वक्रोक्ति को  
उत्तर—(c) रस को

**YUKTI ज्ञान**—मम्मट रसवादी आचार्य थे, अतः वे रस को काव्य की आत्मा मानते थे।

7. 'अभिव्यंजनावाद' किस विद्वान् का सिद्धान्त है?

- (a) क्रोचे का (b) अरस्तू  
(c) ईलियट (d) रिचर्ड  
उत्तर—(a) क्रोचे का

**YUKTI ज्ञान**—अभिव्यंजनावाद के प्रवर्तक क्रोचे (Croce) थे। अरस्तू, ईलियट, रिचर्ड ने इसका प्रवर्तन नहीं किया।

8. 'विरचन सिद्धान्त' दिया है—

- (a) जाक देरिदा ने (b) क्रोचे ने  
(c) अरस्तू ने (d) प्लेटो ने  
उत्तर—(c) अरस्तू ने

**YUKTI ज्ञान**—विरचन सिद्धान्त अरस्तू का है जिसके आधार पर उन्होंने दुःखांत नाटकों (Tragedy) की व्याख्या की है।

9. 'काव्य भाषा सिद्धान्त' के प्रणेता हैं—

- (a) वर्ड्सवर्थ (b) ईलियट  
(c) रिचर्ड (d) इनमें से कोई नहीं  
उत्तर—(a) वर्ड्सवर्थ

**YUKTI ज्ञान**—काव्य भाषा सिद्धान्त के प्रणेता हैं विलियम वर्ड्सवर्थ जिसका विवेचन उन्होंने बायोग्राफिया लिटरेरिया तथा प्रिफेस लिरिकल बैलड्स में किया है।

10. 'विखण्डनवाद' के जनक हैं—

- (a) जाक देरिदा (b) क्रोचे  
(c) लांजाइनस (d) सेस्यूर  
उत्तर—(a) जाक देरिदा

**YUKTI ज्ञान**—विखण्डनवाद के जनक हैं जाक देरिदा, क्रोचे ने अभिव्यंजनावाद का लांजाइनस ने शैत्यवाद और सेस्यूर ने संरचनावाद का प्रतिपादन किया है।

11. कौन-सा सिद्धान्त अरस्तू का है—

- (a) विरेचन सिद्धान्त (b) अभिव्यंजनावाद  
(c) काव्यभाषा सिद्धान्त (d) ये सभी  
उत्तर—(a) विरेचन सिद्धान्त

**YUKTI ज्ञान**—दिए गए सिद्धान्तों में अरस्तू का सिद्धान्त है विरेचन सिद्धान्त, अभिव्यंजनावाद के प्रवर्तक क्रोचे हैं, काव्यभाषा सिद्धान्त के वर्ड्सवर्थ।

12. अरस्तू का समय है—

- (a) 427 ई. पू. — 347 ई. पू. (b) 374 ई. पू. — 322 ई. पू.  
(c) 100 ई. पू. — 175 ई. पू. (d) इनमें से कोई नहीं  
उत्तर—(b) 374 ई. पू. — 322 ई. पू.

13. 'पोयटिक्स' के रचयिता हैं—

- (a) अरस्तू (b) लांजाइनस  
(c) क्रोचे (d) प्लेटो  
उत्तर—(a) अरस्तू

**YUKTI ज्ञान**—अरस्तू की कृति है पोयटिक्स, क्रोचे ने *Aesthetics*, लांजाइनस ने *On the Sublime* तथा प्लेटो ने *The Republic* काव्य ग्रंथ लिखे हैं।

14. प्लेटो का ग्रन्थ कौन-सा नहीं है?

- (a) *On the Sublime* (b) *The Republic*  
(c) *The Statesman* (d) *The Laws*  
उत्तर—(a) *On the Sublime*

**YUKTI ज्ञान**—*On the Sublime* लांजाइनस की रचना है। शेष तीनों प्लेटो के ग्रंथ हैं।

15. 'Aesthetics' के रचयिता का नाम है

- (a) क्रोचे (b) अरस्तू  
(c) ईलियट (d) लांजाइनस  
उत्तर—(a) क्रोचे

**YUKTI ज्ञान**—*Aesthetics* क्रोचे की रचना है, अरस्तू लांजाइनस या ईलियट की नहीं। अरस्तू की रचना है — *Politics*, लांजाइनस की रचना है — *On the Sublime* और ईलियट की रचना है *Definition of Culture, Essays on Poets & Poetry* आदि।

## 8.4 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ और उनके रचयिता

संस्कृत काव्य-शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ		
रचयिता	ग्रन्थ का नाम	विशेष
1. भरतमुनि (200 ई.पू. के आसपास)	नाट्यशास्त्र	विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगात् रस निष्पत्तिः।
2. भामह (6वीं शती)	काव्यालंकार	शब्दार्थौ साहेतौ काव्यम्, सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिः कोऽलंकारो अनया बिना।
3. दण्डी (7वीं शती)	काव्यादर्श	काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।
4. उद्भट (6वीं शती)	काव्यालंकार सार संग्रह	—
5. आचार्य वामन	काव्यालंकार सूत्रवृत्ति	रीतिरात्मा काव्यस्य, सौन्दर्यम्ऽलंकारः, रस को कान्ति नामक गुण में समाहित किया।
6. आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	काव्यस्मृतात्मा ध्वनिरिति:
7. अभिनवगुप्त	ध्वन्यालोक लोचन, अभिनव भारती	रस सूत्र के चौथे व्याख्याता, इनका मत अभिव्यक्तिवाद कहा जाता है। ये रस-ध्वनि को काव्य की आत्मा मानते हैं। इनके अनुसार रस व्यंग्य होता है।
8. राजशेखर	काव्य-मीमांसा	18 अभिकरणों में विभक्त ग्रन्थ था, जिसका केवल एक अभिकरण कवि रहस्य ही प्राप्त होता है।
9. धनंजय	दशरूपक	नाटक पर लिखा ग्रन्थ।
10. भट्टनायक	हृदय दर्पण	अभिनव भारती में इस ग्रन्थ का उल्लेख है। वे साधारणीकरण सिद्धान्त के आविष्कारक थे। भावकत्वं साधारणीकरणं तेन हि व्यापारेण विभावदय स्थायी च साधारणी क्रियन्ते। ये रस सूत्र के तीसरे व्याख्याता हैं। इनका मत 'भुक्तिवाद' कहलाता है।
11. आचार्य कुन्तक (10वीं शती)	वक्रोक्ति जीवित	वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक, इनका कथन है—वैदग्ध्यभंगीभणिति वक्रोक्तिः। वक्रोक्ति के 6 भेद उन्होंने किये हैं।
12. महिमभट्ट (11वीं शती)	व्यक्ति विवेक	ध्वनि सिद्धान्त के आलोचक।
13. क्षेमेन्द्र (11वीं शती)	औचित्य विचार चर्चा	औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक, औचित्य को काव्यात्मा पद पर प्रतिष्ठित किया।
14. भोजराज (11वीं शती)	सरस्वती कण्ठाभरण, शृंगार प्रकाश	शृंगार को रसराज मानते हैं।
15. मम्मट (12वीं शती)	काव्य प्रकाश	1. ध्वनि संस्थापन परमाचार्य। 2. तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। 3. अलंकार को काव्य का अनिवार्य तत्व नहीं मानते। 4. ये रसवादी आचार्य हैं। 5. इन्होंने छह काव्य प्रयोजन बताये हैं और आत्म-शान्ति को सकल मौलिभूत काव्य प्रयोजन माना है।
16. जयदेव (12वीं शती)	चन्द्रालोक	मम्मट के अनलंकृति शब्द की तीखी आलोचना की। ये अलंकारवादी आचार्य थे।
17. आचार्य विश्वनाथ (14वीं शती)	साहित्य दर्पण	1. वाक्यं रसात्मकं काव्यं। 2. महाकाव्य के लक्षणों के निरूपक 3. रसवादी आचार्य 4. वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली तीन रीतियाँ मानते हैं।
18. पण्डितराज जगन्नाथ (17वीं शती)	रस गंगाधर	रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। अलंकारों, रसों, काव्य हेतुओं के विवेचक।



## हिन्दी काव्य-शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ

रचयिता	ग्रन्थ का नाम	विशेष
1. कृपाराम	हित तरंगिणी	भक्तिकालीन रीतिग्रंथ
2. आचार्य केशवदास (1560-1617 ई.)	कवि प्रिया, रसिक प्रिया, छन्दमाला	1. भूषण बिनु न विराजई कविता बनिता मित। 2. अलंकारवादी आचार्य
3. चिन्तामणि (1600-1680 ई.)	कवि कुल कल्पतरु, काव्य विवेक, रस विलास, शृंगार मंजरी	
4. मतिराम (1604-1710 ई.)	रसराम, ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी	रस, छन्द, अलंकार के विवेचक
5. भिखारीदास (1725-1760 ई.)	काव्य निर्णय, छन्दो वर्ण पिंगल	रसों का विवेचन, शृंगार रस का पूर्ण विवेचन
6. सोमनाथ	रस पीयूष निधि, शृंगार विलास	सर्वांग निरूपक आचार्य जिन्होंने काव्यांगों के सभी पक्ष— रस, अलंकार, दोष, शब्द शक्ति, छन्द का विवेचन किया है।
7. देव (1673-1733 ई.)	भाव विलास, भवानी विलास, काव्य रसायन, शब्द रसायन, रस विलास	अलंकारों, रस का विवेचन किया
8. पद्माकर (1753-1833 ई.)	पद्माभरण, जगद्दिनोद	कवित्व एवं आचार्यत्व का समन्वय अलंकारों से सम्बन्धित भ्रम का निवारण
9. ग्वाल कवि (1791-1868 ई.)	रसिकानन्द, अलंकार भ्रम भंजन, रसरंग, कवि दर्पण	अलंकार ग्रन्थ
10. जसवंत सिंह	भाषा-भूषण	निबंध-ग्रन्थ परन्तु इसमें काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का कहीं-कहीं समावेश हो गया है।
11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	चिन्तामणि, रस-मीमांसा	हिन्दी काव्यशास्त्रीय ग्रंथ
12. बाबू गुलाबराय	काव्य के रूप, सिद्धान्त और अध्ययन	रस का विवेचक हिन्दी ग्रंथ
13. डॉ. नगेन्द्र	रस सिद्धान्त	हिन्दी काव्यशास्त्रीय ग्रंथ
14. गोविंद त्रिगुणायत	शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त	

## विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता का नाम है—

- (a) मम्मट (b) भरतमुनि  
(c) जयदेव (d) विश्वनाथ

उत्तर—(b) भरतमुनि

**YUKTI ज्ञान**—नाट्यशास्त्र के रचयिता हैं— आचार्य भरतमुनि, मम्मट के ग्रंथ का नाम काव्य प्रकाश, जयदेव — चंद्रालोक, विश्वनाथ — साहित्य दर्पण के रचयिता हैं।

2. 'काव्य-प्रकाश' किसका ग्रन्थ है?

- (a) मम्मट का (b) विश्वनाथ का  
(c) भट्टलोल्लट का (d) दण्डी का

उत्तर—(a) मम्मट का

**YUKTI ज्ञान**—काव्य प्रकाश — आचार्य मम्मट का ग्रंथ है। विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण, दण्डी ने काव्यादर्श की रचना की। भट्टलोल्लट का कोई ग्रंथ नहीं मिलता।

3. दण्डी किस प्रकार के आचार्य थे?

- (a) अलंकारवादी (b) रसवादी  
(c) ध्वनिवादी (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) अलंकारवादी

**YUKTI ज्ञान**—दण्डी अलंकारवादी आचार्य थे क्योंकि वे काव्यादर्श में लिखते हैं काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।

अर्थात् अलंकार काव्य शोभा को उत्पन्न करने वाले तत्व हैं जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है अलंकार काव्य शोभा में वृद्धि तो करते हैं पर काव्य शोभा उत्पन्न नहीं कर सकते।

4. 'काव्यमीमांसा' के रचयिता हैं—

- (a) विश्वनाथ (b) पण्डितराज जगन्नाथ  
(c) राजशेखर (d) आचार्य मम्मट

उत्तर—(c) राजशेखर

**YUKTI ज्ञान**—काव्यमीमांसा — राजशेखर द्वारा रचित है। पण्डितराज जगन्नाथ ने रस गंगाधर, विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण और मम्मट ने काव्य प्रकाश नामक ग्रंथ लिखा।

5. 'भूषण बिनु व विराजई कविता बनिता मित' किसका कथन है?

- (a) चिन्तामणि (b) भिखारीदास  
(c) केशवदास (d) देव

उत्तर—(c) केशवदास

**YUKTI ज्ञान**—दी गयी पंक्ति रीतिकालीन आचार्य केशवदास की है जिसमें वे अलंकार को काव्य का अनिवार्य तत्व मानते हैं।

6. 'साहित्य दर्पण' के रचनाकार हैं—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) मम्मट  
(c) राजशेखर (d) विश्वनाथ  
उत्तर—(d) विश्वनाथ

**YUKTI ज्ञान**—साहित्य दर्पण आचार्य विश्वनाथ (14वीं सदी) की कृति है, मम्मट ने काव्यप्रकाश, राजशेखर ने काव्यमीमांसा, रामचन्द्र शुक्ल ने चिन्तामणि और रसमीमांसा की रचना की है।

7. 'रस गंगाधर' के रचयिता हैं—

- (a) विश्वनाथ (b) पण्डितराज जगन्नाथ  
(c) राजशेखर (d) गुलाबराय  
उत्तर—(b) पण्डितराज जगन्नाथ

**YUKTI ज्ञान**—रस गंगाधर के रचयिता हैं पण्डितराज जगन्नाथ विश्वनाथ के ग्रंथ का नाम है — साहित्य दर्पण  
राजशेखर के ग्रंथ का नाम है — काव्यमीमांसा  
गुलाबराय के ग्रंथ का नाम है — सिद्धान्त और अध्ययन

8. 'सिद्धान्त और अध्ययन' किसकी रचना है?

- (a) गुलाबराय (b) रामविलास शर्मा  
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) गोविन्द त्रिगुणायत  
उत्तर—(a) गुलाबराय

**YUKTI ज्ञान**—सिद्धान्त और अध्ययन — गुलाबराय की कृति है।  
रामचन्द्र शुक्ल का ग्रंथ है — चिन्तामणि  
डॉ. नगेन्द्र के ग्रंथ का नाम है — रस सिद्धान्त  
डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के ग्रंथ का नाम है — शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त

9. 'रस सिद्धान्त' के रचयिता हैं—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) डॉ. नगेन्द्र  
(c) गुलाबराय (d) रामस्वरूप चतुर्वेदी  
उत्तर—(b) डॉ. नगेन्द्र

**YUKTI ज्ञान**—रस सिद्धान्त डॉ. नगेन्द्र की रचना है।  
रामचन्द्र शुक्ल के ग्रंथ का नाम है — चिन्तामणि, रसमीमांसा  
गुलाबराय के ग्रंथ का नाम है — सिद्धान्त और अध्ययन तथा काव्य के रूप  
रामस्वरूप चतुर्वेदी के ग्रंथ का नाम है — भाषा और संवेदना

10. 'चिन्तामणि' के रचनाकार हैं—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) गुलाबराय  
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) हजारीप्रसाद द्विवेदी  
उत्तर—(a) रामचन्द्र शुक्ल

**YUKTI ज्ञान**—चिन्तामणि के रचनाकार हैं — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल  
गुलाबराय का ग्रंथ है — सिद्धान्त और अध्ययन  
डॉ. नगेन्द्र के ग्रंथ का नाम है — रस सिद्धान्त  
हजारीप्रसाद द्विवेदी की कृति है — नाथ सम्प्रदाय

## 8.5 छन्द

वर्ण, मात्रा, पद, यति आदि के नियमानुरूप प्रयोग से युक्त रचना 'छन्द' कहलाती है।

**YUKTI ज्ञान**—जिस प्रकार व्याकरण भाषा का नियमन करता है, उसी प्रकार छन्द 'पद्य' का नियामक है। पद्य रचना की जानकारी के लिए छन्द का ज्ञान परमावश्यक है। छन्दबद्ध रचना में स्थायित्व होता है, वे हमें सरलता से कण्ठस्थ हो जाती हैं। छन्द के कारण काव्य में गेयता आ जाती है, अतः उसका प्रभाव बढ़ जाता है।

**छन्द के प्रकार**—छन्द दो प्रकार के होते हैं—

(अ) **वर्णिक छन्द**—जिनमें वर्णों की गणना की जाती है वे 'वर्णिक छन्द' कहे जाते हैं। तीन-तीन वर्णों के समूह बनाये जाते हैं, जिन्हें 'गण' कहा जाता है।

(ब) **मात्रिक छन्द**—जिनमें मात्राओं का विधान रहता है, वे 'मात्रिक छन्द' कहे जाते हैं। 'S' मात्रा दीर्घ के लिए तथा 'I' मात्रा ह्रस्व (लघु) के लिए लगती है।

गणों की संख्या 8 है। सभी गणों के नाम, सूत्र, उदाहरण इस सूत्र से जाने जाते हैं—

### य मा ता रा ज भा न स ल गा

गणों के नाम	सूत्र	मात्राएँ
• यगण	यमाता	I SS
• मगण	मातारा	SSS
• तगण	ताराज	SSI
• रगण	राजभा	SIS
• जगण	जभान	ISI
• भगण	भानस	SII
• नगण	नसल	III
• सगण	सलगा	IIS

**प्रमुख वर्णिक छन्द**—जिन छन्दों की रचना वर्णों की गणना के आधार पर की जाती है, वे 'वर्णिक छन्द' कहे जाते हैं। प्रमुख वर्णिक छन्दों के लक्षण, उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं—

(1) **इन्द्रवज्रा**—प्रत्येक चरण में 11 वर्ण—दो तगण (SSI, SS I), एक जगण (I S I), दो गुरु (SS) होते हैं। यथा—

जो मैं नया ग्रन्थ विलोकता हूँ।  
S S I S S I I S I S S

(2) **उपेन्द्रवज्रा**—प्रत्येक चरण में 11 वर्ण—जगण (I S I), तगण (SS I) जगण (I S I), दो गुरु (SS) होते हैं। यथा—

बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै  
I S I S S II S I S S

(3) **वसंततिलका**—प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण—तगण (SS I), एक भगण (S I I), दो जगण (I S I, I S I) तथा दो गुरु (SS) वर्ण होते हैं। यथा—

भू में रमी शरद की कमनीयता थी।  
S S I S I I I S I I S I S S

(4) **मालिनी**—15 वर्ण प्रत्येक चरण में—दो नगण (III, III) एक भगण (S I I), दो यगण (ISS, ISS) होते हैं।

प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है।

I I I I I S S S I S S I S S



- (5) **मन्दाक्रान्ता**—प्रत्येक चरण में 17 वर्ण—एक भगण (SSS), एक भगण (SII), एक नगण (III), दो तगण (SSI, SSII), दो गुरु (SS) होते हैं। यथा—

तारे डूबे तम टल गया छा गयी व्योम लाली  
SS SS II II IS S IS SI SS

- (6) **शिखरिणी**—प्रत्येक चरण में 17 वर्ण—एक यगण (ISS), एक भगण (SSS), एक नगण (III), एक सगण (IIS), एक भगण (SII), एक लघु एक गुरु (IS), यथा—

अनूठी आभा से सरस सुषमा से सुरस से  
ISS SS S III IIS S I IIS

- (7) **वंशस्थ**—प्रत्येक चरण में 12 वर्ण—एक जगण (ISI), एक तगण (SSI), एक जगण (ISI), एक रगण (SIS), यथा—  
न कालिमा है मिटती कपाल की।

I SIS I IIS ISI S

- (8) **द्रुतविलम्बित**—प्रत्येक चरण में 12 वर्ण—एक नगण (III), दो भगण (SII, SII), एक रगण (SIS), यथा—

दिवस का अवसान समीप था  
III S IIS ISI S

- (9) **मत्तगयन्द (मालती)**—प्रत्येक चरण में 23 वर्ण—सात भगण (SII, SII, SII, SII, SII, SII, SII), दो गुरु (SS), यथा—

सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर ध्यावै  
SII SII SII SII SII SII SII SS

- (10) **सुन्दरी सवैया**—प्रत्येक चरण में 25 वर्ण—आठ सगण (IIS, IIS, IIS, IIS, IIS, IIS, IIS, IIS) एक गुरु (S), यथा—

कर बान सरासन सीस जटा सरसीरुह लोचन सोन सुहाये।  
II SI ISII SI IS ISII SII SI ISII

**मात्रिक छन्द—**

- (1) **चौपाई**—चार चरण प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ। चरण के अन्त में दो गुरु होते हैं। यथा—

SII III III IIS = 16 मात्राएँ  
बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।

सुरुचि सुवास सरस अनुरागा॥

अमिय मूरिमय चूरन चारु।

समन सकल भव रुज परिवारु॥

- (2) **दोहा**—अर्द्ध सम मात्रिक छन्द है। चार चरण। पहले, तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे, चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं—

S III III ISI III III III ISI = 24 मात्राएँ  
श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।

बरनउँ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि॥

- (3) **सोरठा**—यह दोहा छन्द का ठीक विपरीत होता है। इसमें भी चार चरण होते हैं। इसमें पहले तथा तीसरे में 11-11 मात्राएँ तथा समचरणों में यानि दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

**उदाहरण—**

SI ISII SI III III SII III = 24 मात्राएँ

नील सरोरुह स्याम, तरुन अरुन बारिज नयन।

करउ सो मम उर धाम, सदा छीरसागर सयन॥

- (4) **कुण्डलिया**—यह विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं। पहले दो चरण के और बाद के दो चरण रोला के होते हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं, परन्तु मात्राओं का क्रम पहले दो चरणों में 13, 11 का तथा बाद के चार चरणों में 11, 13 का रहता है। जिस शब्द से छन्द का आरम्भ होता है, उसी शब्द का प्रयोग अन्त में होता है। यथा—

SS SII SII SII SII SII SII

साई बैर न कीजिए गुरु, पण्डित, कवि, यार।

- (5) **रोला**—चार चरण, प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ 11, 13 पर यति। यथा—

SS SS IS ISS SII SS = 24 मात्राएँ

जीती जाती हुई जिन्होंने मारत बाजी,

- (6) **हरिगीतिका**—चार चरण, प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ अन्त में लघु गुरु तथा 16, 12 पर यति। यथा—

मन जाहि राँचेउ मिलहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो

II SI SII III SII III SII SII = 28 मात्राएँ

- (7) **छप्पय**—छः चरण, विषम मात्रिक छन्द। प्रथम चार चरण रोला के तथा 24 मात्राओं वाले अन्तिम दो चरण उल्लाला के अतः 15, 13 यति वाले होते हैं।

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।

SSII IISII III III SII S = 24 मात्राएँ

करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेष की

IIS IISII ISI S IIS S IISI S = 28 मात्राएँ

- (8) **बरवै**—चार चरण, पहले, तीसरे चरण में 12-12 मात्राएँ तथा दूसरे, चौथे चरण में 7-7 मात्राएँ। अतः प्रत्येक पंक्ति में 19 मात्राएँ। यथा—  
प्रेम प्रीति को विरवा चले लगाय

SI SI S IIS IS ISI = 19 मात्राएँ

- (9) **गीतिका**—चार चरण, 26 मात्राएँ, 14, 12 पर यति, चरण के अन्त में लघु गुरु, यथा—

हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिए।

S IS SSISS SI IIS SIS = 26 मात्राएँ

## 8.6 अलंकार

जो अलंकृत करे, अर्थात् शोभा में वृद्धि करे उसे 'अलंकार' कहते हैं। जैसे सुन्दर स्त्री की शोभा आभूषणों से बढ़ जाती है, वैसे ही कविता की शोभा अलंकारों से बढ़ती है। अलंकार शोभा को बढ़ा सकते हैं, शोभा उत्पन्न नहीं कर सकते, उसी तरह जैसे—आभूषण सुन्दर स्त्री की शोभा बढ़ा सकते हैं, पर कुरूप स्त्री को सुन्दर नहीं बना सकते। अलंकार प्रमुखतः दो प्रकार के होते हैं—शब्दालंकार, अर्थालंकार। अलंकार काव्य के आभूषण होने से काव्य की सजावट तो बढ़ा सकते हैं पर उन्हें काव्य का आन्तरिक तत्व नहीं माना जा सकता है।

दण्डी, रुद्रट, भामह, जयदेव आदि संस्कृत के अलंकारवादी आचार्य हैं, जबकि हिन्दी में आचार्य केशवदास को अलंकारवादी आचार्य कहा जाता है। अलंकारवादी आचार्य अलंकार को काव्य का प्राण तत्व मानते हैं पर अब ऐसा नहीं माना जाता है। कविता का मूल तत्व (प्राण तत्व) तो रस ही है।

### 1. शब्दालंकार

जहाँ शब्द विशेष के ऊपर अलंकार की निर्भरता हो, शब्दालंकार कहते हैं। शब्दालंकार में शब्द विशेष के प्रयोग के कारण ही कोई चमत्कार उत्पन्न होता है, इन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों को रख देने पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता है।

### 2. अर्थालंकार

कविता में जब भाषा का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है कि अर्थ में समृद्धि और चमत्कार उत्पन्न हो तो उसे अर्थालंकार कहते हैं।

#### प्रमुख शब्दालंकार

प्रमुख शब्दालंकार हैं—अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति, वीप्सा।

(1) **अनुप्रास**—जहाँ एक वर्ण की कई बार आवृत्ति हो यथा—

भूरि भूरि भेद भाव भूमि से भगा दिया

(2) **यमक**—एक शब्द अनेक बार अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त हो, यथा—

जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं।

तारे = उद्धार करना, तारे = नक्षत्र

(3) **श्लेष**—एक शब्द एक बार अनेक अर्थों में प्रसंग भेद से प्रयुक्त हो, यथा—

पानी गये न ऊबरे मोती मानस चून।

पानी = आभा, इज्जत, जल

(4) **वक्रोक्ति**—उक्ति में वक्रता का समावेश हो, यथा—

मैं सुकुमारि नाथ वन जोगू। तुमहि उचित तप मो कहँ भोगू॥

यह वाक्य वक्रोक्ति है। इसका दूसरा भेद श्लिष्ट वक्रोक्ति है। यथा—

को तुम हों घनस्याम प्रिये तौ बरसौ उत जाय।

घनस्याम = कृष्ण, काले बादल

(5) **पुनरुक्ति**—एक ही शब्द एक ही अर्थ में दो बार प्रयुक्त हो। यथा—

तौर-तौर विहार करती सुन्दरी सुकुमारियाँ

(6) **वीप्सा**—शब्द की पुनरुक्ति भाव संवर्धन के लिए होने पर 'वीप्सा अलंकार' होता है। यथा—

हा-हा इन्हें रोकन को टोक न लगावौ तुम

'हा-हा' में वीप्सा है, क्योंकि यह दुःख भाव की वृद्धि कर रहा है।

#### प्रमुख अर्थालंकार

प्रमुख अर्थालंकार हैं—उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान, अनन्वय, प्रतीप, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति।

(1) **उपमा**—जहाँ रूप, रंग, गुण, धर्म के कारण एक वस्तु (उपमेय) की तुलना दूसरी वस्तु (उपमान) से की जाती है, वहाँ 'उपमा अलंकार' होता है।

**उदाहरण**—हरिपद कोमल कमल से।

**स्पष्टीकरण**—यहाँ हरिपद की तुलना कमल से की गई है। दोनों में कोमलता का गुण समान रूप से विद्यमान है, अतः उपमा अलंकार है। उपमा के चार अंग होते हैं—उपमेय, उपमान, वाचक, साधारण धर्म।

**हरि पद कोमल कमल से।**

हरिपद — उपमेय है, कमल — उपमान

कोमल — साधारण धर्म तथा से — वाचक शब्द है।

(2) **रूपक**—जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप स्थापित कर दिया जाये, वहाँ 'रूपक अलंकार' होता है।

अभेद आरोप का अर्थ है—भेद रहित आरोप अर्थात् उपमेय-उपमान में कोई भेद नहीं रहता। उपमेय पर उपमान इस तरह छा जाता है कि अब दर्शक, पाठक या श्रोता को केवल उपमान ही दिखाई पड़ता है। स्पष्ट है कि अब क्रिया उपमान की होगी।

अरुण गोविल यदि राम का रूप धारण करता है तो अभेद आरोप है क्योंकि वह अरुण गोविल की क्रियाएँ न करके राम की क्रियाएँ (लीलाएँ) ही करता है।

**उदाहरण**—अम्बर पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी॥

**स्पष्टीकरण**—आकाश रूपी पनघट में उषा रूपी स्त्री तारे रूपी घड़े को डुबो रही है। आकाश पर पनघट का, उषा पर स्त्री का और तारों पर घड़े का अभेद आरोप होने से यहाँ रूपक अलंकार है।

रूपक अलंकार के तीन उपभेद हैं—सांगरूपक, परम्परित रूपक, निरंग रूपक।

(3) **उत्प्रेक्षा**—उत्प्रेक्षा का अर्थ है कल्पना, जहाँ उपमेय में उपमान की कल्पना या सम्भावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। मनु, मनो, जनु, जानो शब्द आने पर 'उत्प्रेक्षा अलंकार' को पहचाना जा सकता है।

**उदाहरण**—सोहत ओढ़ै पीत पटु स्याम सलोने गात।

मनौ नीलमनि सैल पर आतपु पर्यौ प्रभात॥

**स्पष्टीकरण**—यहाँ श्रीकृष्ण का श्यामल शरीर और पीताम्बर उपमेय है। जिन पर क्रमशः नीलमणि पर्वत एवं प्रभातकालीन धूप की सम्भावना व्यक्त की गई है, अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।

उत्प्रेक्षा के चार उपभेद माने गये हैं—(1) वस्तुत्प्रेक्षा, (2) हेतुत्प्रेक्षा, (3) फलोत्प्रेक्षा, (4) गम्योत्प्रेक्षा।

(4) **सन्देह**—रूप-रंग आदि के सादृश्य से जहाँ उपमेय में उपमान का संशय बना रहे या उपमेय के लिए दिये गये उपमानों में संशय रहे, वहाँ 'सन्देह अलंकार' होता है।

**उदाहरण**—सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।

सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है॥

**स्पष्टीकरण**—साड़ी के बीच नारी है या नारी के बीच साड़ी—इसका निश्चय नहीं हो पाने के कारण सन्देह अलंकार है।

(5) **भ्रान्तिमान**—उपमेय में उपमान का भ्रम होने पर यदि तदनु रूप क्रिया हो तो 'भ्रान्तिमान अलंकार' होता है। भ्रान्तिमान में उपमान (भ्रांति) का

निश्चय हो जाता है इसलिए उपमेय की क्रिया उस भ्रांति के अनुसार ही होती है।

**उदाहरण**—बिल विचार कर नाग शुण्ड में घुसने लगा विषैला साँप।

काली ईख समझ विषधर को उठा लिया तब गज ने आप ॥

**स्पष्टीकरण**—हाथी की सूँड़ को काले सर्प ने बिल समझा और वह घुसने लगा तथा हाथी ने काले सर्प को काला गन्ना समझकर सूँड़ से उठा लिया, अतः यहाँ भ्रान्ति होने के कारण भ्रान्तिमान अलंकार है।

- (6) **अनन्वय**—जहाँ उपमेय की तुलना उपमेय से की जाये वहाँ 'अनन्वय अलंकार' होता है। अनन्वय में उपमेय को ही उपमान बना दिया जाता है।

**उदाहरण**—भारत के सम भारत है।

**स्पष्टीकरण**—यहाँ भारत की तुलना भारत से ही करके अनन्वय अलंकार का विधान किया गया है।

- (7) **प्रतीप**—प्रतीप का अर्थ है, उल्टा या विपरीत। यह अलंकार उपमा का उल्टा है, क्योंकि उपमा अलंकार में उपमान श्रेष्ठ होता है, जबकि 'प्रतीप अलंकार' में उपमेय को श्रेष्ठ दिखाया जाता है या फिर उपमान को हीन या लज्जित दिखाकर उपमेय की श्रेष्ठता प्रतिपादित की जाती है।

**उदाहरण**—सिय सुख समता किमि करै चन्द बापुरो रंक।

**स्पष्टीकरण**—बेचारा गरीब चन्द्रमा (उपमान) सीता जी के सुन्दर मुख (उपमेय) की तुलना कैसे कर सकता है? उपमेय की श्रेष्ठता प्रतिपादित होने से यहाँ प्रतीप अलंकार है।

- (8) **विशेषोक्ति**—प्रतीप अलंकार में केवल उपमेय को श्रेष्ठ या उपमान को निकृष्ट बताया जाता है, जबकि विशेषोक्ति में यह भी बताया जाता है कि उपमेय उपमान से क्यों श्रेष्ठ है या उपमान उपमेय से क्यों हीन (निकृष्ट) है; जैसे—

जनम सिंधु पुनि बंधु विष दिन मलीन सकलंक।

सिय मुख समता किमि करै चन्द बापुरो रंक ॥

**स्पष्टीकरण**—बेचारा गरीब चन्द्रमा सीता जी के मुख की तुलना कैसे कर सकता है क्योंकि चन्द्रमा तो समुद्र से उत्पन्न होने से विष का भाई है, वह सीता जी के मुख की तुलना नहीं कर सकता अर्थात् सीता का मुख चंद्रमा से श्रेष्ठ है। यहाँ कारण सहित श्रेष्ठता का उल्लेख है, अतः विशेषोक्ति अलंकार है।

- (9) **दृष्टान्त**—जहाँ उपमेय और उपमान के साधारण धर्म में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव दिखाया जाये, वहाँ 'दृष्टान्त अलंकार' होता है।

**उदाहरण**—पापी मनुज भी आज मुख से राम-नाम निकालते।

देखो भयंकर भेड़िये भी आज आँसू ढालते ॥

**स्पष्टीकरण**—यहाँ पापी मनुष्य का प्रतिबिम्ब भेड़िये में तथा राम-नाम का प्रतिबिम्ब आँसू से पड़ रहा है, अतः दृष्टान्त अलंकार है।

- (10) **अतिशयोक्ति**—जहाँ किसी वस्तु का इतना बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाये कि सामान्य लोक सीमा का उल्लंघन हो जाये वहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है।

**उदाहरण**—लहरें व्योम चूमती उठतीं

**स्पष्टीकरण**—यहाँ समुद्र की लहरों को आकाश चूमते हुए कहकर उनकी अतिशय ऊँचाई का उल्लेख अतिशयोक्ति के माध्यम से किया गया है। अतिशयोक्ति अलंकार के कई उपभेद हैं; यथा—

- (i) रूपकातिशयोक्ति, (ii) सम्बन्धातिशयोक्ति, (iii) भेदकातिशयोक्ति, (iv) चपलातिशयोक्ति, (v) अतिक्रमातिशयोक्ति, (vi) असम्बन्धातिशयोक्ति।

### विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. दोहा और रोला के संयोग से बनने वाला छन्द है—

- (a) पीयूषवर्णी (b) उपेन्द्रवज्रा  
(c) छप्पय (d) कुण्डलिया

उत्तर—(c) छप्पय

**YUKTI ज्ञान**—दोहा, रोला के संयोग से छप्पय छंद बनता है इसमें एक दोहा और एक रोला होता है। प्रत्येक चरण में 24 - 24 मात्राएँ होती हैं।

2. दोहा का लक्षण बताइये—

- (a) 48 मात्राएँ (b) 24 मात्राएँ, 13, 11 पर यति  
(c) 26 मात्राएँ, 14, 12 पर यति (d) 28 मात्राएँ, 14, 14 पर यति

उत्तर—(b) 24 मात्राएँ, 13, 11 पर यति

**YUKTI ज्ञान**—दोहा छंद में 24 मात्राएँ होती हैं 13, 11, पर यति होती है और अन्त में दोनों पंक्तियों में तुक मिलती है, शेष तीन उत्तर गलत हैं।

3. बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।

महामोहतम पुंज जासु वचन रवि कर निकर ॥ मैं कौन-सा छन्द है?

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) दोहा (b) सोरठा  
(c) चौपाई (d) बरवै

उत्तर—(b) सोरठा

**YUKTI ज्ञान**—दिए गये छंद में सोरठा है क्योंकि प्रत्येक चरण में 24 - 24 मात्राएँ हैं तथा 13 - 11, 13 - 11 के क्रम से यति होती है।

4. बरवै छन्द का लक्षण है—

छत्तीसगढ़ टी.जी.टी.

- (a) 19 मात्राएँ, 12, 7 पर यति (b) 26 मात्राएँ, 13, 13 पर यति  
(c) 23 वर्ण (d) 24 वर्ण

उत्तर—(a) 19 मात्राएँ, 12, 7 पर यति

**YUKTI ज्ञान**—बरवै छंद में 12, 7 के क्रम से कुल 19 मात्राएँ होती हैं।

5. इन सूचियों को सुमेलित कीजिए—

सूची-I

सूची-II

- |                  |                |
|------------------|----------------|
| 1. आरोपवाद       | A. अभिनवगुप्त  |
| 2. अनुमितिवाद    | B. भट्टलोल्लट  |
| 3. भुक्तिवाद     | C. आचार्य शंकु |
| 4. अभिव्यक्तिवाद | D. भट्टनायक    |
|                  | E. महिमभट्ट    |

कोड—

1	2	3	4
(a) B	C	D	A
(b) D	A	C	B
(c) C	B	E	D
(d) E	B	C	D

उत्तर—(a) आरोपवाद (भट्टलोल्लट), अनुमितिवाद (आचार्य शंकुक), भुक्तिवाद (भट्टनायक), अभिव्यक्तिवाद (अभिनवगुप्त)

6. भरत के अनुसार रसों की संख्या है—

- (a) 9 (b) 8  
(c) 10 (d) 11

उत्तर—(b) 8

**YUKTI ज्ञान**—भरत के अनुसार नाटक में रसों की संख्या केवल आठ मानी गयी है वे निर्वेद (स्थायी भाव) का अभिनय असंभव मानते हैं अतः शान्त रस को नाटक में स्थान नहीं देते।

7. 'ध्वनि' सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं—

- (a) भरत मुनि (b) मम्मट  
(c) आनन्द वर्धन (d) अभिनवगुप्त

उत्तर—(c) आनन्द वर्धन

**YUKTI ज्ञान**—ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य है आनन्द वर्धन, भरतमुनि रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक है, मम्मट ने किसी नए सम्प्रदाय का प्रवर्तन नहीं किया जबकि अभिनवगुप्त ने अभिनव भारती में ध्वन्यालोक की टीका प्रस्तुत की है।

8. 'वीभत्स रस' का स्थायी भाव है—

- (a) घृणा (b) जुगुप्सा  
(c) क्रोध (d) भय

उत्तर—(b) जुगुप्सा

9. 'काव्य प्रकाश' के रचयिता हैं—

- (a) विश्वनाथ (b) महिमभट्ट  
(c) मम्मट (d) कुन्तक

उत्तर—(c) मम्मट

**YUKTI ज्ञान**—काव्य प्रकाश के रचयिता हैं मम्मट, विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण, महिमभट्ट ने व्यक्ति विवेक और कुन्तक ने वक्रोक्ति जीवित नामक ग्रंथ लिखे।

10. 'बिनु पग चलै सुनै बिनु काना' में कौन-सा अलंकार है ? उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) विभावना (b) विशेषोक्ति  
(c) उत्प्रेक्षा (d) रूपक

उत्तर—(a) विभावना

**YUKTI ज्ञान**—बिनु पग चलै सुनै बिनु काना में कारण (पैर का) के अभाव में कार्य (चलना, सुनना) सम्पन्न हो रहे हैं अतः विभावना अलंकार है।

11. 'करुण रस' का स्थायी भाव है—

- (a) शोक (b) हास

(c) भय

(d) रति

उत्तर—(a) शोक

**YUKTI ज्ञान**—करुण रस का स्थायी भाव शोक है। किसी की मृत्यु हो जाने पर करुण रस होता है; यथा—

शोक विकल सब रोवहि रानी।

रूप तेज गुण सील बखानी॥

राजा दशरथ की मृत्यु पर सभी रानियां उनके रूप, तेज, गुण, शील का बखान करती हुई रो रही थीं।

12. इनमें से कौन-सा छन्द वर्णिक है?

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) दोहा (b) चौपाई  
(c) वंशस्थ (d) रोला

उत्तर—(c) वंशस्थ

**YUKTI ज्ञान**—दोहा, चौपाई, रोला, मात्रिक छंद हैं क्योंकि इनमें मात्राएं गिनी जाती हैं जबकि वंशस्थ वर्णिक छंद है क्योंकि इसमें वर्णों की गिनती होती है।

13. 'काली घटा का घमण्ड घटा' में कौन-सा अलंकार है? उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) श्लेष (b) यमक  
(c) अनुप्रास (d) उपमा

उत्तर—(b) यमक

**YUKTI ज्ञान**—घटा शब्द का प्रयोग दो बार अलग-अलग अर्थों में हुआ है; यथा घटा = काली बदली। घटा = कम हो गया। अतः रूपक अलंकार है।

14. 'भारत के सम भारत है' में कौन-सा अलंकार है?

- (a) उपमा (b) प्रतीप  
(c) अनन्वय (d) उत्प्रेक्षा

उत्तर—(c) अनन्वय

**YUKTI ज्ञान**—भारत के सम भारत है में अनन्वय अलंकार है क्योंकि भारत (उपमेय) की तुलना भारत (उपमान) से ही की गयी है।

15. 'पीपर पात सरिस मन डोला' में अलंकार है—

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) उपमा (b) रूपक  
(c) उत्प्रेक्षा (d) प्रतीप

उत्तर—(a) उपमा

**YUKTI ज्ञान**—पीपर पात सरिस मन डोला में उपमा (पूर्णापमा) अलंकार है। यहाँ उपमान के चारों अंग— उपमेय— मन, उपमान— पीपर पात, वाचक— सरिस, धर्म— डोला (चंचल) उपस्थित हैं।

## अध्याय 9. हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य के पहले इतिहास लेखक गार्सा-द-तासी हैं। उन्होंने फ्रेंच भाषा में पुस्तक लिखी, उसका नाम है—इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐंदुई ऐंदुस्तानी (1839)।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य इतिहास ग्रन्थ हैं—

1. शिवसिंह सरोज (1883 ई.) शिवसिंह सेंगर
2. मिश्र बन्धु विनोद (1913 ई.) मिश्र बन्धु
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास (1929 ई.) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल



4. हिन्दी साहित्य की भूमिका आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी



5. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (1938 ई.) डॉ. रामकुमार वर्मा



6. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (1965 ई.) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त



7. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास सम्पादक—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

(इसके 16 खण्ड हैं, छठवें खण्ड 'रीतिकाल' का सम्पादन डॉ. नगेन्द्र ने किया है।)



### काल विभाजन

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का काल विभाजन—

1. वीरगाथा काल (सम्वत् 1050-1375 वि.)
2. भक्तिकाल (सम्वत् 1375-1700 वि.)
3. रीतिकाल (सम्वत् 1700-1900 वि.)
4. गद्यकाल (सम्वत् 1900-1984 वि.)

उक्त काल विभाजन को संशोधित कर इस प्रकार सुविधाजनक बनाया गया है—

1. आदिकाल (1000 ई.-1350 ई.)
2. भक्तिकाल (1350 ई.-1650 ई.)
3. रीतिकाल (1650 ई.-1850 ई.)
4. आधुनिक काल (1850 ई.-अब तक)

#### नामकरण—

- आदिकाल वीरगाथा काल, प्रारम्भिक काल, आरम्भिक काल, चारण काल, सिद्ध सामन्त युग, बीजवपन काल
- भक्तिकाल पूर्व मध्यकाल
- रीतिकाल उत्तर मध्यकाल, शृंगार काल, अलंकृत काल, कलाकाल
- आधुनिक काल गद्यकाल, वर्तमान काल।

शुक्लजी का काल विभाजन इस सिद्धान्त पर टिका है—जनता की चित्तवृत्ति तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर बनती है। शुक्ल जी ने कालों के नामकरण में दो बातों पर बल दिया है।

1. प्रवृत्ति की प्रधानता, 2. ग्रंथों की प्रसिद्धि।

### 9.1 आदिकाल (1000-1350 ई.)

#### आदिकाल की प्रवृत्तियाँ

1. ऐतिहासिकता का अभाव,
2. कल्पना की प्रचुरता,
3. युद्ध वर्णन में सजीवता,
4. अप्रामाणिक रचनाएँ,
5. वीर एवं शृंगार रस की प्रधानता,
6. आश्रयदाताओं की प्रशंसा,
7. संकुचित राष्ट्रीयता,
8. छन्दों की विविधता,
9. डिंगल-पिंगल भाषा का प्रयोग।

## आदिकाल की प्रमुख रचनाएँ

- प्रथम कवि — राहुल सांकृत्यायन के अनुसार, सरहपा (7वीं शती) हिन्दी के पहले कवि हैं। राहुल सांकृत्यायन ने भले ही सरहपा को हिन्दी का पहला कवि माना हो पर उनका कोई स्वतंत्र ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। उनके फुटकल दोहे ही अब तक मिले हैं।
- प्रथम रचना — डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, देवसेन कृत श्रावकाचार (933 ई.) हिन्दी की पहली रचना है। इसी कारण डॉ. नगेन्द्र ने देवसेन की रचना श्रावकाचार को हिन्दी की प्रथम रचना स्वीकार किया है।

लेखक	काल	रचनाएँ
1. वीसल देव रासो	(1212 ई.)	नरपति नाल्ह
2. पृथ्वीराज रासो	(1343 ई.)	चंदबरदाई—हिन्दी का पहला महाकाव्य
3. परमाल रासो	(आल्हखण्ड)	जगनिक
4. हम्मीर रासो	(1357 ई.)	शार्ङ्गधर
5. खुमान रासो	(1729 ई.)	दलपति विजय
6. विजयपाल रासो	(16वीं सदी)	नल्ल सिंह

## टिप्पणी

1. विजयपाल रासो, हम्मीर रासो अपभ्रंश में लिखे गए हैं।
2. अधिकांश रासो काव्यों में कल्पना की प्रधानता, ऐतिहासिकता का अभाव होने से वे अप्रामाणिक रचनाएँ हैं।
3. चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो हिन्दी का पहला महाकाव्य माना जाता है किन्तु वह भी अप्रामाणिक रचना मानी गयी है। मूल पृथ्वीराज रासो (बृहत रासो) में 69 सर्ग और लगभग 2500 पृष्ठ हैं। इसमें समय-समय पर यह वर्णन होता रहा है जिसके कारण इसे विकासशील महाकाव्य माना जाता है।

## आदिकालीन अपभ्रंश साहित्य

- संदेश रासक (12वीं शती) अब्दुर्रहमान
- पउम चरित (8वीं शती) स्वयम्भू (द्वारा रचित रामकाव्य)  
स्वयम्भू अपभ्रंश के बाल्मीकि कहे जाते हैं।
- रिट्ठणमिचरित (8वीं शती) स्वयम्भू (द्वारा रचित रामकाव्य)
- महापुराण (10वीं शती) पुष्पदन्त। पुष्पदन्त ने महाभारत की रचना महापुराण के नाम से अपभ्रंश में की है अतः उन्हें अपभ्रंश का व्यास कहा जाता है।

- भविसयत्तकहा (10वीं शती) धनपाल
- उपदेश रसायनरास (12वीं शती) जिनिदत्त सूरि
- पाहुड़ दोहा (11वीं शती) रामसिंह
- प्राकृत पैंगलम — संकलित रचनाएँ
- ढोला मारू न दूहा (11वीं शती) कुशल लाभ

## आदिकालीन गद्य

- वर्ण रत्नाकर — ज्योतिरीश्वर ठाकुर
- राउलवेल — रोडा—यह शिलांकित कृति है।
- डिंगल भाषा = अपभ्रंश + राजस्थानी,
- पिंगल भाषा = अपभ्रंश + ब्रजभाषा

आदिकाल में अमीरखुसरो ने मनोरंजक साहित्य (पहेलियाँ, कहानियाँ, दोसखुन) आदि खड़ी बोली हिन्दी में लिखे। वे फारसी के बहुत बड़े विद्वान थे खालिकवारी नामक शब्दकोश की रचना उन्होंने ही की। खड़ी बोली हिन्दी के वे पहले कवि माने जाते हैं।

विद्यापति मैथिली भाषा में पदावली की रचना करने वाले शृंगारी कवि हैं यद्यपि कुछ लोग उन्हें भक्त कवि भी मानते हैं।

आदिकाल में जैन साहित्य, नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य भी मिलता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल में इसे धार्मिक साहित्य (विशेषकर जैन साहित्य) मानकर साहित्य क्षेत्र से बहिष्कृत कर दिया, परन्तु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे साहित्य की कोटि में रखा है। जैन साहित्य में रास काव्य अधिक लिखे गए, यथा—

बुद्धिरास	—	मुनि शालिभद्र
चंदन वाला रास	—	आसगु कवि
स्थूलिभद्र रास	—	जिनि धर्मसूरि
रेवंतगिरि रास	—	विजय सेन सूरि
नेमिनाथ रास	—	सुमति मुनि
कच्छुली रास	—	प्रज्ञा तिलक
पंच पाण्डव रास	—	मुनि शालिभद्र
भरतेश्वर बाहुबली रास	—	मुनि शालिभद्र
उपदेश रसायन रास	—	जिनिदत्त सूरि
गौतम स्वामी रास	—	उदयवंत

## 9.2 भक्तिकाल (1350-1650 ई.)

भक्तिकाल की दो धाराएँ हैं—निर्गुण धारा, सगुण धारा।

निर्गुण धारा के दो उपविभाग हैं—सन्त काव्य धारा, सूफी काव्य धारा।

सगुण धारा की दो शाखाएँ हैं—कृष्ण भक्ति शाखा, राम भक्ति शाखा।

## निर्गुण धारा

## (i) सन्त काव्य धारा

इसे 'ज्ञानाश्रयी शाखा' भी कहते हैं। इसके प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं—



## संत काव्य धारा के प्रमुख कवि एवं उनकी कृतियाँ

- | कवि     | काल            | कृतियाँ  |
|---------|----------------|--|
| 1. कबीर | (1398-1518 ई.) | साखी, सबद, रमैनी। इन तीनों का संकलन 'बीजक' नाम से कबीर के शिष्य धर्मदास ने किया। |



- |          |                |                 |
|----------|----------------|-----------------|
| 2. रैदास | (1398-1448 ई.) | रविदास की बानी। |
|----------|----------------|-----------------|



- |              |                |  |
|--------------|----------------|--|
| 3. गुरु नानक | (1469-1538 ई.) | जपुजी, रहिरास, असा-दी-वार सोहिला—गुरु ग्रन्थ साहब में नानक के पद संकलित हैं। |
|--------------|----------------|--|



- |                   |                |   |
|-------------------|----------------|---|
| 4. हरिदास निरंजनी | (1455-1543 ई.) | अष्टपदी, जोगग्रन्थ, ब्रह्मस्तुति, हंस प्रबोध। |
|-------------------|----------------|---|

- |              |                |                    |
|--------------|----------------|--------------------|
| 5. दादू दयाल | (1544-1603 ई.) | हरडे वाणी, अंगवधू। |
|--------------|----------------|--------------------|



- |            |                |   |
|------------|----------------|---|
| 6. मलूकदास | (1574-1682 ई.) | ज्ञानदीप, रतनखान, भक्तिविवेक, राम अवतार लीला, ध्रुव-चरित। |
|------------|----------------|---|



- |              |                |                            |
|--------------|----------------|----------------------------|
| 7. सुन्दरदास | (1596-1689 ई.) | ज्ञानसमुद्र, सुन्दर विलास। |
|--------------|----------------|----------------------------|

## संतकाव्य की विशेषताएँ

- |                            |                         |
|----------------------------|-------------------------|
| 1. निर्गुणोपासना,          | 2. अद्वैतवादी दर्शन,    |
| 3. बाह्याडम्बरों का खण्डन, | 4. जाति-प्रथा का विरोध, |
| 5. नारी विषयक दृष्टिकोण,   | 6. अपरिष्कृत भाषा,      |
| 7. शान्त रस की प्रधानता।   |                         |

## (ii) सूफी काव्य धारा

सूफी काव्य को प्रेमाख्यानक काव्य, प्रेमगाथा काव्य परम्परा, प्रेममार्गी शाखा भी कहा जाता है।

## हिन्दी सूफी काव्य के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

प्रमुख कवि	रचना	रचनाकाल
• मुल्ला दाउद	चंदायन	1379 ई.
• कुतुबन	मृगावती	1503 ई.
• जायसी	पद्मावत	1540 ई.
• मंझन	मधुमालती	1545 ई.
• शेखनवी	ज्ञानदीप	1619 ई.
• नूर मुहम्मद	अनुराग बाँसुरी	1764 ई.
• नूर मुहम्मद	इन्द्रावती	1744 ई.

## सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

- |  |                              |
|--|------------------------------|
| 1. मुसलमान कवि,                            | 2. मसनवी शैली,               |
| 3. अलौकिक प्रेम की व्यंजना,                | 4. कथा संगठन का सौन्दर्य,    |
| 5. लोक पक्ष एवं हिन्दू संस्कृति का चित्रण, |                              |
| 6. वस्तु वर्णन,                            | 7. भाव एवं व्यंजना,          |
| 8. खण्डन-मण्डन का अभाव                     | 9. प्रबन्ध काव्यों की रचना   |
| 10. अरबी भाषा का प्रयोग                    | 11. वियोग वर्णन की प्रधानता। |